

寄言 ; (程順則 名護親方)  
 作曲 : miyaako

本調子

七	五	七	工	尺	上	上	四	四	上	尺	工	合	工	五	合	老	四	上	四	老
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

ウ	ミ	チ	ミ	リ	イ	工	五	上	尺	工	合
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

ア	サ	ユ	ン	ム	ヌ	グ	ウ	ト	ウ	ニ	イ	合	老	四	四	上	四	上	ワ
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

チ	ム	ウ	サ	ミ	ユ	ル	カ	ナ	ミ	ト	ウ	乙	尺	合	上	合	老	四	老	上	尺	工	尺	上	尺	四	上
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

ム	リ	工	五	上	尺	老	工	合	工	尺
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

一、恥ゆ思み詰みり 朝夕物事に  
 我肝修みゆる 要と思り

二、意見寄言や 身の上の宝  
 耳の根ゆ開きて 肝に留みり

三、肝の根の責縄 そさうにしちからや  
 手墨学問も 仇となゆる

四、欲悪の事や 塵程も持ちな  
 塵積むてからや 山どなゆる

五、見馴れ聞き馴れや 覚らじに染ん  
 そさうに有る人の 側にをるな